वेदों में चराचर संसार को उत्पन्न करने वाला पदार्थ

मनुष्यों के लिये ईश्वर ने ज्ञान-विज्ञान के अनन्त स्त्रोत वेदों का ज्ञान भारत के कण-कण और जन-जन में प्रदान किया है किन्तु न जाने किन शक्तियों के कारण भारत के विद्वान इस ज्ञान से वंचित होकर वेदों के ज्ञान के मात्र उच्चारण तक ही सीमित रह गये हैं। भारत के गुरुकुलों में भी इस ज्ञान को प्राप्त करने के लिये शिक्षा दी जाती है किन्तु वह शिक्षा भी व्यवहार में प्रयोग न होकर मात्र उच्चारण तक ही सीमित रह जाती है।

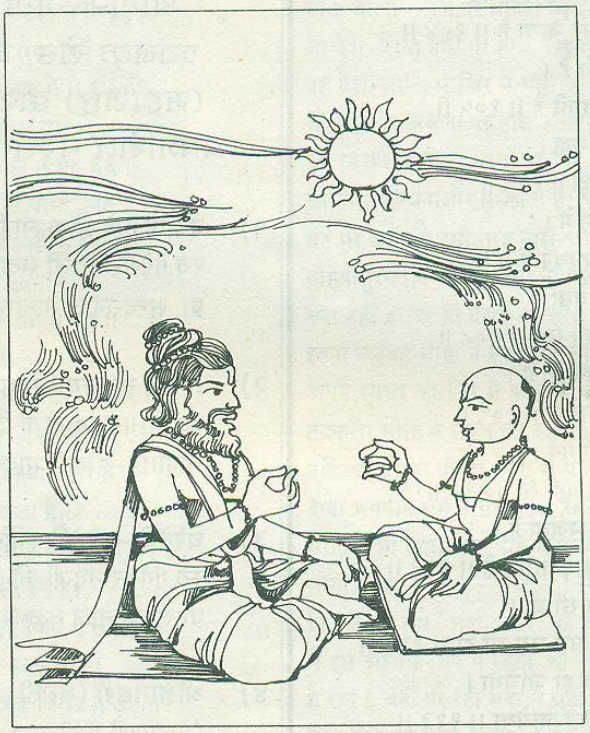

जिस समय यह जगत अव्यक्त रुपसेव्यत्त रुप में आया तो इसमें क्या-क्या पदार्थों का प्रयोग हुआ इसका पूर्ण ज्ञान वेदों में कराया गया है। इनमें से एक पदार्थ 'सोमास' का यहां पर जानकारी देने का प्रयास किया जा रहा है। सोमास को चराचर संसार का उत्पादक पदार्थ बतलाया गया है। ऋ. १/५/५ में मधुछन्दा ऋषि चिन्हांकित मंत्रों में विद्युत विज्ञान में गायत्री छन्द माध्यम द्वारा वायु और सूर्य विद्युत द्वारा उत्पादन करने वाला पदार्थ बतलाया गया है। यह प्रकरण अथर्ववेद २०/६९ वाले सूक्त में भी दिया गया है। यहा पर गायत्री छन्द होने से इस विद्या का ब्राह्मण वर्ण प्रणाली और पूर्व दिशा प्रणालियाँ भी इस विद्या के साथ संयुक्त होंगी। ऋ. १/२३/१ में काण्डवो मेघातिथि ऋषि सिद्धांत में वायु विज्ञान के लिए गायत्री छन्द माध्यम द्वारा ही सोमास को इधर-उधर चलने वाले परमाणु रुपों को अपने अन्दर करने वाला पदार्थ बतलाया गया है। ऋ १/५३/६ में अङ्गिरस सव्य ऋषि सिद्धान्तों में विद्युत विज्ञान में त्रिष्टुप छन्द माध्यम द्वारा सोमांस द्वारा उत्तम-उत्तम पदार्थों को उत्पन्न करने वाला सिद्धान्त दिया गया है। इस प्रकरण में त्रिष्टुप छन्द होने के कारण क्षत्रिय वर्ण और दक्षिण दिशा प्रणालियों का समन्वय होना है। यह प्रकरण अथर्ववेद २०/२१/६ में भी है। ऋ.१/१३५/६ में परुच्छेद ऋषि के वायु विज्ञान में अष्टी छन्द माध्यम द्वारा सोमांस को ऐश्वर्ययुक्त एवं नाश रहित पदार्थ बतलाया गया है। यहां पर शुक्रा नामक किरण और आहाव नामक पदार्थ का भी और अप्सु नामक जलों में उत्पन्न होने वालें सिद्धान्तों का भी वर्णन किया गया है। इसी प्रकरण को इसी मण्डल के १३७ वे सूक्त में भी राश्यिभि: नामक किरणों के साथ मित्रावरूण विज्ञान में दर्शाया गया है। ऋ १/१६८/३ में अगस्त ऋषि के मरुत विज्ञान में स्वराष्ट त्रिष्टुप छन्द माध्यम द्वारा सोमांस पदार्थों का विवरण दिया गया है। ऋ. ३/३२/५ में विश्वामित्र ऋषि सिद्धान्त में निचृत्रिष्टुप छन्द माध्यम द्वारा सोमांस पदार्थों के सिद्धान्तों का वर्णन किया गया है। इस प्रकरण में मेघ की बूदों में बनने वालो कोष और कलश सिद्धांन्तों का भी वर्णन है। जो परमाणु रुप अत्यन्त सूक्ष्म पदार्थों की संरचना में काम आते हैं। यह प्रकरण अथर्ववेद २०/८/३, ऐत्रेय ब्राह्मण ६/३/३ में भी उपलब्ध है। विश्वामित्र ऋषिके ही विद्युत विज्ञान में ऋग्वेद ३/३६/३ और ४ वाले मंत्रों में भी कुछ विशेष सिद्धान्तों का वर्णन किया गया है। यहां पर चन्द त्रिष्टुप और पंक्ति है। शव नामक उदक, बल और धन नामों के साथ इसका प्रयोग विवरण है। चना नामक पश्य तिकर्मा के आठ भेदों में से एक भेद को साथ इसके प्रयोग का सिद्धान्त दिया गया है। इस प्रकरण पर निरुक्त ६/२३ गोपथ ब्राह्मण उत्तर्राचिक ४/३ में भी कुछ प्रकाश डाला गया है। विश्वामित्र ऋषि चिन्हनांकित ऋग्वेद ३/४६/४ में विद्युत विज्ञान में ही त्रिष्टुप छन्द माध्यम द्वारा ही प्रकाश और गर्भ विज्ञान में सोमास पदार्थों का विवरण दियागया है। ऋ ४/४२/६ में त्रसदस्यु पौरूकुत्स्य ऋषि के आत्मा विज्ञान में त्रिष्टुप छन्द माध्यम द्वारा सहनामक उदक और वलों के साथ सोमास सिद्धान्तों को पार रहित अपरिमित सूर्व लोक और भूमि लोक को कम्पाने वाला सिद्धान्त दिया गया है। ऋ ५/३०/१० में वभ्रु रात्रेय

ऋषि सिद्धान्तों में इन्द्र ऋणंचयश्न विद्युत के ऋण स्वभाव पर विराट त्रिष्टुप छन्द माध्मम द्वारा सोमस पदार्थों को ईम नामक उदक और निघन्टु ५/२ में दिये पदार्थों में से एक पदार्थ विशेष के साथ अस्य नामक विद्युत अग्नि (ऋ १/६४/१) के द्वारा सोमास पदार्थों का जीव और सूर्य शक्ति के साथ प्रयोग विवरण दिया गया है। ऋ ४/४९/१ में स्वस्त्यात्रेय ऋषि चिह्नाकिंत मंत्र में विश्वेदेवा देवता के विराटष्टिकछन्द माध्यम द्वारा मित्रा वरूण के साथ 'सोमास' पदार्थ का प्रयोग सिद्धांत दिया गया है। यहां पर दध्याशिर: का प्रयोग होने से यह प्रसंग ऋ १/५/६;१/१३१/२;१/३२/४, २५/२२/३.६३/१६: १०१/१२; मा. दू. २८३ अ. २०/६८/३ बाले प्रसंग्डं के साथ मी इसका संबन्ध जुड जाता है। ऋ १/३२/४ में वीसष्ठ: ऋषि के विद्युत विज्ञान में विराट वृहती छन्द माध्यम द्वारा अस्त्र-शस्त्रों को प्ररित करने बाला सोमास पदार्थ सिद्धांत दिया गया है। ऋ ८/८/१४ में शशकर्ण: कण्व: ऋषि के अश्विनो विज्ञान में निवृद वृहतीछन्द माध्यम द्वारा इमें उदक के १०१ में दों में जे एक तथा (विछन्दु ४/२ में दिये ८४ पदार्थों में से एक पदार्थ विशेष का प्रयोग दर्शाया गया है। सोमास के साथ अन्तिक के ११ मे दों में से एक भेद के साथ भी इसका प्रयोग दिया गया है। यह भेद (तुर्वश:) है। ऋ ८/१६/८ में कुमसुति काण्त: ऋषि के विद्युत विज्ञान में गायत्री छन्द माध्यम द्वारा अन्दिव नामक विद्युत ममत्वत् नामक वायु द्वारा सोमास पदार्थों के निर्माण सिद्धांत दिये हैं। ऋ ८/८३/६ में सुकक्ष ऋषि के विद्युत विज्ञान में गायत्री छन्द माध्यम द्वारा सोमास द्वारा विद्युत क्षेत्र मे असित काश्यपो देवलो वा ऋषि चिन्हाकिंत मंत्रों में पवमान सोम देवता के गायत्री छन्द माध्यम द्वारा सोमास को राये नामक घनों को देने वाला, रथाइत नामक अति शीर्घ गीत करने वाली विद्युत, शक्ति, रशिमयों को घारणाकाने में सहायक मार उढाने वाला, आदि प्रकृति की आद शक्तियों के साथ संलग्न सिध्दांत दिया गया है। यह प्रकरण सामवेद उत्तरीवर्क १११६ से ११२१ वाले खण्ड के मंत्रों के क्रम को अदल बदल कर जुड़ा हुआ है। ऋ ८/२१/२ में विद्युत की सहायता से क्षामास: को आर्द करने वाला सिद्धांत दिख गया है। ऋ ८/२२८१ में 'सोमास' को सृष्टियों के शब्दायमान सिद्धांतों का वर्णन किया है ऋ ८/१२४/१-१ में इस को 'दून्दव नामक विछुद दीप्ति और आसु नामक जल द्वारा शुद्धि करने वाला सिद्धात दिया गया है। ऋ ८/३१/१-६ मैं गौतम: ऋषि सिद्धातों में, ऋ ८/३२/१-६ में श्यावाश्व ऋषि और ऋ ८/३३/१-६ में सोमास पदार्थों के अलग-अलग सिद्धांत दिये हैं। यह प्रकरण सामवेद ४.११; '१६१,१६८-११; १६४-६६; में भी है। ऋ ८/६३/१५ में निघ्रुवि: काश्यप ऋषि के गायत्री छन्द माध्यम द्वारा सोमास: पदार्थ को दध्यशिर के जोडा है। ऋ ५/२२ में मृगनायणि जर्मदर्ग्वि ऋषि ने गायत्री छन्द माध्यम द्वारा परावीर्त (ब्रह्म मय शीत्त) अर्वावात (प्रकृति अप शीत्त में) कार्य करने वाले सोमास पदार्थ सिद्धांत दिये हैं। यह प्रकरण सामवेद ११६३-६५ में भी है। ऋ ८/६११-५ में वसु भारद्वाज ऋषि ने जगती छन्द माध्यम द्वारा वैश्य वर्ण और पश्चिम दिशा प्रणालियों द्वारा सोमास सिद्धांत दिये हैं। ऋ ८/८५२ मै प्रस्कण्व ऋषि सिद्धांतों में पति छन्द द्वारा सोमस् पदार्थ सिद्धांत दिया गया है। ऋ ८/१०१/१ में सातर्षेय ऋषि के पवमान सोम देवता के विराट वृहती छन्द द्वारा कारण तत्व में विद्यमान सोम पदार्थ सिद्धांत दिया गया है। सामवेद १०३४ मे काश्यप, ऋषि के सोम विज्ञान में गायत्री छन्द द्वारा पुरूष रूप और जीवन नामक ३१ पदार्थ विशेषों में एक पदार्थ विशेष (विधन्दु ५/६) के साथ 'मोमास' सिद्धांत दिया है। यह प्रकरण ऋ ८/६४ में

भी है। ता.ब्रा. १३/१/५ में भी इस प्रकरण के लिये कुछ सारसा है। सामवेद ११०२ में मनु ऋषि के अनुष्टुप छन्द द्वारा शुद्र वर्ण और उत्तर दिशा प्रणालियों द्वारा सूर्य के प्रकाश को धारण करने वाले सोमास पदार्थ सिद्धांत दिये गये हैं। यह प्रकरण ऋग्वेद ८/१०१/१,१२;१६ में भी है। ऋग्वेद २१२१ में अमित देवलो ऋषि सिद्धांतो में सोमास को पृथ्वी, प्रकाश, ऋ ८/१० में भी है। सामवेद १२४८ में सोमपा को विद्युत शीत्रद्वारा नृमेघ ऋषि सिद्धांतों में अंतरिक्ष, पृथ्वी और द्योंलोक को वश में रखने वाला सिद्धांत दिया गया है। यह प्रकरण ऋ ८/८८ में है। यजु १८/२ में भारद्वाज: ऋषि ने अनुष्टुप छन्द द्वारा जलों के मध्य में रहने वाले सोमास पदार्थ सिद्धांत का दर्शन कराया है। यह प्रकरण ऋ ८/१०१/१ सा.प्र. १२, १३१३ तै. ब्रा. २/६/१/१. श.ब्रा. १२/८/२/४ में भी दिया गया है।

इस तरह से अध्ययन करने पर सोमाक्ष पदार्थ सृष्टि में एक बहुत ही महत्वपुर्ण पदार्थ सिद्ध होता है। इसे वैदिक शोघ संस्थान हो क्षिरपुट द्वारा समस्त वैदिक ग्रन्थों की पद सूचियों द्वारा अच्चयन करने पर आधुनिक विज्ञान से समन्वय करने के लिये अत्यन्त महत्व पूर्ण पदार्थ सिद्ध हो सकता है, इस लिये विद्वानों द्वारा इस पर शोध कार्य करके इसे संसार के वैज्ञानिकों के समक्ष प्रस्तुत करवाना अमीष्ट उद्देश्य है। आशा है भारत के विश्वविद्यालय और शिक्षा मंत्रालय इस पर शोध कार्य करवायेंगे सघन्यवाद।

आयकर - **छैलबिहारी लाल गोयल**
वेद विद्या अनुसंधानरत बारहद्वारी, पसरट्टा बाजार, हथरस,
अलीगढ़-२०४१०१